णए॥ श्री विजयसेनसूरीश्वरचरणपंकजेभ्योनमोनमः॥ सकलमनोरथसरवा। समर्थजेसाचउ। ज्यांतिजिणेसरदेवदेषिमनमांहिनावउ। आकदुरासमादेवदेषामसराचउ। अविरायणीरयणीषाणि। जिनहरवजावउ। ज्यांतिजिणेसरसोलमोए। तेहनाषणमीपाय। नगतिसावश्राणीकरी। कहिसुगुरुसज्झाय॥१॥ घणाकणकंचणरयणरासिमोतीपरवाली। साईनजामाबताय बंदवनइबाल। स्वामीसेवकसुजनबंदसुसरा। दिकवगी ऊणदेस्यइकहवजीवनइपरलोकइसु गकिलिमंहितेकोनहीए। गुरुवणतारणहारा। इमजाणीनइंमेवयो। श्रीगुरुशिवदातार॥२॥ गुरुदी वउगुरुदेवतागुरुसमऊणकहीइ। गुरुघीलए हीइसयलसिद्धिगुरुचरणइरहीइ। चारित्रदर्शी नविनयज्ञानगुरुधीसविलहीइगुरुनुवचन कुरवउमाण। गुरुनागुणगृहीइदेवतणीपरिजेव लीए। गुरुनाप्रजइपाय। लषिमीलीलातेलहइस विसुषीआघाय॥३॥ गुरुघीलहीइमुवहनिदीकानिर्वु क्किउसगनिईअपवादमार्गअतिसष्यमबुक्कि। ज वउजीवनइंछएपापाआश्रवनइंबंध। संवरनिर्जरमोक्षतउगुरुविणजगअंध। गुरुसूरजिसाचउसहिएद हदसिकरइषकास। छएपहस्पइतेपामस्पइ। निश्चयगुरुऊलवास॥४॥ गुरुऊलवासत्यजीकरीहीयउइम तिहीणा। तेअज्ञानीवापडा। दीसइ। अतिदीणा। तेपरलोकईलहइकेमा। सुरलोकविमानइहलोकइपणि वामिरापामइअपमानइमजाणीगुरुऊलवसउए। वहउयोगउपधमना। उत्तराध्ययनइंइमकहिउं

णाज्योदेईकानापा। गुरुविणाकिमहोइहेमषेमा। गुरुविणाकिमहुधर्मा। गुरुविणाकिमऊपजषषाणा। पोसहविधिममआ लोअणकहोकवणदेइ। किमछूटइकर्मा। गुरुउपदेशासुएणविना। किमत्तागजइनर्मा। इमजाणीगुरुसेवजोए। देज्योगुरुबऊ मानाइहनविपरत्तविजावनइजिमऊपसुलऊज्ञान॥६॥ गुरुपाषइजेकहइधर्मा। तेहधर्मविरोधी। ऊगतितेवलिपामस्पइ। तेऊर्लनबोधी। पहपरंपरगुरुतणी। श्रावकेनविजाणी। गुरुनउऊपसहमरिजी॥ एआगमवाणीजिनवरनाषिउंएसहिए नगवतीसूत्रमऊरि। कल्पसूत्रवलीजोअजो। जोयोविचा विचारि॥७॥ अत्तागमजेणंतरापरंपरागमकहिया। एआग मबिहविणिनेदकिमतेसहहिआ। गुरुपाषइतोएकनेदा। वपजतोनदीसइ। एआगमबिविणिपकारते किमकहिआ जगदीसइ। एअर्थमावउअवइएयोयउअउयोगधर॥ गुरुसहहणासाचीकरउ। साचउसूत्रविचार॥८॥ गुरु पाषइजेकहइधर्मतेपहोइनविरुद्धा। तपजपसंयमकि याकष्टकरतांबऊऊद्धा। गुरुदीठहोइदहदसिएकर इअर्थपकाश। धर्ममोक्षदनकारणि। गुरुनाषइइहाम॥९॥ शुद्धपरंपरसाधुजेहतिहांबइवलिधर्मबीजाबोलइआ लमाल। बोधबीजकर्मा गुरुविणतेनविसंनवइ। परंपराश्रविछिन्ना। पितापकीजिमसुतनी संततिजइछन्ना। पट्टपरं परजेहनिए। सुधीजाणीजाइ। चालीआवश्वारधी। तेगुरुशुद्धकहाइ॥१०॥ उषधविद्यामंत्रतंत्रनऊइगुरुपाषइतेहनि विद्यामंत्रतंत्रसीऊइगुरुसाषि॥ नागाऊनेनइंपादलेपविद्या। नविआवइ। तेहजुसीधीतेहनईगुरुराजपला वइ। इमजाणीनइंमेवयोए। सुहगुरुकेरापाय। लषिमीलीलाजिममलइ। कीरतिसुवणानमाय॥११॥ महियलि

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

मोटउ गुरु महांत गणधर श्री केसी। जसु उपदेस सुणी जउ श्रावक परदेसी। नास्तिक मत मुंकी करी तत पिणि पडिबुद्ध
। मिथ्यामत मुंकावला द्यइ मंडिउ सुद्ध। जिणि हिंसा बंधक करिए काढ्यु नरग पियाए। गुरु उपसंदघे। तेमही पामीस्यइ गवि मान।
।।१२।। आहार उषध वस्त्र पात्र गुरु नइं दिइ आणी। गुरु नी सक्ति करइ जे सेवगु एवंत वषाणी। घण्फल लाजे महासती। के
वल गुरु सक्ति। केवल ज्ञान लही करी। उजउती ते मुक्ति। इम जाणी नइ बंधए रिए। गुरु नी सक्ति उदार। जे करस्यइ मान
वसही तेलहस्यइ भव पार।।१३।। सयल पदारथ उजुविमा । सिजे आपइ सरणा। तोहइ उहइ गुणमीसा। निज गुरु।
नइ उरणा। गणी गेए कहिउ विचार। जोयो वीजइ गणिए त लोअर्थ छबिषि सिद्ध। कविजणा बंजजाणे। गुरु नी सेवा जे
करइए। गुरु नइ दइ बंछमान। ते सुजन इ मान इ सही । इम बोलइ श्री वध मान।।१४। निगुरु नास्तिक मोरसा
रंछ विंजि मर्म उइ। निगुरा विद्या तेम मजाणि। जणइ।। बंछ नेउइ।१। उत्तम करणी सारकामा। तिहां लिउ गुरु त
मो। तत षिणि तिहां कणि होइ मिछ। मीछ इ सविकामा। निगुर उ निगुणउ उजइ सही। जेह सिरि गुरु न उहाघ।।१५।। सुद्ध षरूपक सुद्ध इ यो। ल। समतारसन रिउ। चरणकरण गुणरयणरासि। ते
हनउ जेह रिउ। गछनायक नाम गुण बत्रीस। जसु अंग इ बाजइ। हीरपटोधर विजयसेनसूरी सूरराजइ। महियलि मोहिय
मुनिपतिए। सूरी संघ जगीस। मानसागर सुनिवर कहिंइ। सुविसागर गुरु सीस।।१६।। इति श्री गुरु तत्त्वाधिकारः। संपूर्ण
।। जसलवीजयपवनारथं श्री वीजयसेनसूरीस मायसंसरण श्री थीसामापासेप्रजश्रीः।।

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017